किस तरह आखिरकार मैं हिंदी में आया

प्रश्न-अभ्यास

(पाठ्यपुस्तक से)

1. वह ऐसी कौन सी बात रही होगी जिसने लेखक को दिल्ली जाने के लिए बाध्य कर दिया?

उत्तर कुछ लोगों का स्वभाव ऐसा होता है कि वे किसी के द्वारा कही गई कटु बातों को सहन नहीं कर पाते हैं। उस बात का परिणाम भविष्य में अच्छा होगा या बुरा, इसे समझे बिना उस पर कोई तात्कालिक कदम उठा लेते हैं।

लेखक भी किसी के द्वारा समय-असमय कही गई बातों को सहन नहीं कर पाया होगा। उसकी बातें लेखक के मन को गहराई तक बेध गई होंगी। उसी कटु बात से व्यथित हो वह दिल्ली जाने के लिए बाध्य हो गया होगा।

2. लेखक को अंग्रेजी में कविता लिखने का अफसोस क्यों रहा होगा?

उत्तर एक बार जब बच्चन जी ने लेखक के लिए नोट लिखा तो उसने बच्चन जी के उस नोट का जवाब देने का निर्णय लिया, किंतु अपनी आदत से मजबूर वह पत्रोत्तर न दे सका। इसके बदले में उसने एक अंग्रेजी कविता (सॉनेट) लिख डाला। इस सॉनेट को जब बच्चन ने पढ़ा तो उन्हें यह स्तरानुरूप नहीं लगा। इधर लेखक को इलाहाबाद का साहित्यिक वातावरण, मित्रों का सहयोग, बच्चन, निराला तथा पंत जैसे साहित्यकारों का मार्गदर्शन उसे हिंदी में लेखन करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा था। यह सब देख उसने हिंदी में लिखने का निर्णय लिया जो बाद में भी चलता रहा। इस प्रकार अंग्रेजी में लिखने का उसका प्रयास व्यर्थ गया जिसका उसे अफसोस रहा।

3. अपनी कल्पना से लिखिए कि बच्चन ने लेखक के लिए 'नोट' में क्या लिखा होगा?

उत्तर दिल्ली के 'उकील आर्ट स्कूल' में बच्चन जी लेखक के लिए बहुत अच्छा-सा नोट छोड़कर चले गए। लेखक ने जब नोट को पढ़ा तो उसने बच्चन जी के प्रति कृतज्ञता महसूस की। इसे ध्यान में रखते हुए कहा जा सकता है कि बच्चन जी ने नोट में लिखा होगा कि लेखन में सुनहरा भविष्य तुम्हारा इंतजार कर रहा है। तुम इलाहाबाद आ जाओ। हम सब तुम्हारी मदद के लिए तैयार हैं। जीवन-पथ पर संघर्ष करने वाले ही सफलता प्राप्त करते हैं। जीवन में कभी निराश मत होना। बहादुरी से मुश्किलों का सामना करना। जो परिश्रम एवं संघर्ष करते हैं सफलता उनके कदम चूमती है।

4. लेखक ने बच्चन के व्यक्तित्व के किन-किन रूपों को उभारा है?

उत्तर इस पाठ में लेखक ने बच्चन जी के व्यक्तित्व के अनेक रूपों को उभारा है, जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं–

(*i*) बच्चन जी का स्वभाव अत्यंत दयालु था। उनका हृदय मक्खन-सा मुलायम था।

(*ii*) उनका स्वभाव संघर्षशील, दूसरों के लिए प्रेरणादायी, परोपकारी तथा फौलादी संकल्प वाला था। दूसरों की सहायता करने का अवसर वे कभी न छोड़ते थे।

(*iii*) बच्चन जी समय के बड़े पाबंद थे। वे कहीं भी अपने नियत समय पर पहुँचते थे।

(*iv*) वे किसी से छल-कपट पूर्ण व्यवहार नहीं करते थे।

(*v*) वे नए साहित्यकारों की मदद धन, समय और प्रेरणा के माध्यम से किया करते थे।

(*vi*) वे वाणी के धनी थे। जो कहते थे उसे अवश्य पूरा करते थे।

5. बच्चन के अतिरिक्त लेखक को अन्य किन लोगों का तथा किस प्रकार का सहयोग मिला?

उत्तर लेखक को बच्चन जी के अलावा निम्नलिखित लोगों का सहारा मिला–

(*i*) लेखक को उसके बी.ए. के सहपाठी नरेंद्र शर्मा का सहयोग मिला जो एम.ए. कर चुके थे।

(*ii*) लेखक को देहरादून में केमिस्ट की दुकान पर कंपाउंडरी सिखाने में उसकी ससुराल वालों ने मदद की।

(*iii*) लेखक जब करोलबाग में किराए के मकान में रह रहा था तब उसके भाई उसकी आर्थिक मदद करते थे।

(*iv*) उसे इलाहाबाद में पंत, निराला जैसे प्रसिद्ध साहित्यकारों का सहयोग प्राप्त हुआ, जिन्होंने हिंदी में उसके लेखन का मार्ग प्रशस्त किया।

(*v*) लेखक को सबसे अधिक सहयोग हरिवंशराय बच्चन से मिला, जिन्होंने इलाहाबाद बुलाकर लेखक को एम. ए. करने के लिए प्रेरित किया और एक अभिभावक की तरह एम. ए.करने का पूरा खर्च उठाया। बच्चन जी ने बोर्डिंग में फ्री सीट दिलवाने से लेकर उसकी रचनाओं के लेखन एवं प्रकाशन में कदम-कदम पर सहयोग दिया।

6. लेखक के हिंदी लेखन में कदम रखने का क्रमानुसार वर्णन कीजिए।

उत्तर सन् 1937 में लेखक की मुलाकात 'पंत' और 'निराला' जैसे साहित्यकारों से हुई। उनसे प्राप्त संस्कार, इलाहाबाद-प्रवास और इलाहाबाद का साहित्यिक वातावरण और मित्रों से मिलने वाले साहित्यिक सानिध्य ने लेखक को बहुत प्रभावित किया। उस समय तक लेखक की कुछ कृतियाँ 'सरस्वती' और 'चाँद' पत्रिका में छप चुकी थीं। इसी बीच बच्चन जी ने उसे एक नए प्रकार के स्टैंजा के बारे में बताया जिसमें लिखने का प्रयास लेखक ने किया। संयोग से 'सरस्वती' पत्रिका में छपी एक रचना ने 'निरालाजी' का ध्यान आकृष्ट किया। लेखक ने कुछ निबंध लिखे। इसके बाद वह 'रूपाभ' ऑफिस में प्रशिक्षण लेकर 'हंस' के कार्यालय में चला गया। इस प्रकार लेखक ने क्रमशः हिंदी जगत् में प्रवेश किया।

7. लेखक ने अपने जीवन में जिन कठिनाइयों को झेला है, उनके बारे में लिखिए।

उत्तर पाठ को पढ़ने से पता चलता है कि लेखक को अपने जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। लेखक किसी के द्वारा कटु एवं व्यंग्योक्ति सुनकर जिस स्थिति में था उसी स्थिति में दिल्ली जाने के लिए तैयार हो गया। उस समय उसकी जेब में पाँच-सात रुपये ही थे। वह दिल्ली के उकील आर्ट स्कूल में प्रवेश लेना चाहता था जो आसान न था। फिर भी उसने करोलबाग में किराए के कमरे में रहकर पेंटिंग सीखी। इस अवधि में वह भाई के भेजे कुछ पैसे के साथ-साथ साइनबोर्ड आदि की पेंटिंग करके कुछ कमाता रहा। उसकी पत्नी की मृत्यु टी.बी. से हो गई। वह दुखी मन से दिल्ली को सड़कों पर भटकता रहा। कुछ समय बाद उसने देहरादून में कंपाउंडरी सीखी। यहीं बच्चन जी के साथ उसकी मुलाकात हुई। वह बच्चन जी के साथ इलाहाबाद गया। लेखक ने इलाहाबाद में एम.ए. में एडमीशन लिया पर फीस बच्चन जी द्वारा भरी गई। बोर्डिंग में फ्री सीट, उनकी रचनाओं का प्रकाशन न हो पाना आदि ऐसी कठिनाइयाँ थीं, जिन्हें उसने अपने जीवन झेला था।

कुछ और प्रश्न

I. लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लेखक ने अपने परिवार तथा बचपन के युग को धन्यवाद क्यों दिया है?

उत्तर लेखक का संबंध उस जाट परिवार से था जो बहुत ही सीधा-साधा था। लेखक का परिवार किसी बात को पूरा करने के लिए न तो उससे बलपूर्वक कहता था और न उससे जिद करता था। लेखक ने जो भी रास्ता चुना, वह स्वेच्छा से चुना। उसके परिवार ने कोई विशेष काम करने के लिए बल नहीं दिया। ठीक यही बात उसके बचपन के संबंध में भी थी, जब भाषा को लेकर लोगों के बीच दीवार नहीं खड़ी की जाती थी।

2. 'बच्चन जी समय के पाबंद थे'—पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर हरिवंशराय बच्चन समय के पाबंद थे। उन्हें जहाँ भी जाना होता था समय पर अवश्य पहुँचते थे। बच्चन जी को इलाहाबाद से बाहर जाना था। उस समय जोरदार वर्षा हो रही थी। वर्षा के रुकने की आशा न दिख रही थी। उन्होंने कंधे पर बिस्तर का बंडल रखा और गाड़ी पकड़ने निकल पड़े। स्टेशन तक वे भीगते हुए गए। वे समय से गंतव्य स्थान पर पहुँचे। इस तरह वे समय के पाबंद थे।

3. बाहर से शांत-सा दिखाई देने वाला लेखक अंदर से अशांत क्यों था?

उत्तर टी. बी. की बीमारी की वजह से लेखक का पत्नी की मृत्यु हो गई थी। लेखक इस दुख से अंदर-ही-अंदर टूट चुका था। इसी कारण वह बाहर से शांत और अंदर से अशांत था।

4. 'किस्मत भी उन्हीं का साथ देती है जो कुछ करने के लिए कदम बढ़ाते हैं'—पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर लेखक अपने घर से दिल्ली जाने के लिए निकला। उसे दिल्ली में कहाँ जाना है, यह भी पता नहीं था। लेखक को पेंटिंग का शौक था। उसने उकील आर्ट स्कूल दिल्ली का नाम सुन रखा था। दिल्ली आकर उसने उकील आर्ट स्कूल ढूँढ़ा। यहाँ उसने प्रवेश परीक्षा दी। उसकी पेंटिंग के प्रति रुचि देखकर बिना फीस के प्रवेश दे दिया गया। इससे स्पष्ट होता है कि किस्मत उन्हीं का साथ देती है जो कुछ करने के लिए कदम बढ़ाते हैं।

II. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. लेखक ने 'बात का धनी', 'हृदय मक्खन', 'संकल्प फौलाद' जैसे विशेषण किसके लिए प्रयोग किए हैं और क्यों?

उत्तर लेखक अपनी साहित्य-साधना करते हुए मंजिल तक पहुँचने के लिए संघर्षरत था। उसे अपना भविष्य कुछ निश्चित नहीं लग रहा था। ऐसे में बच्चन जी ने लेखक का बहुत सहयोग किया। बच्चन जी ने उसे आर्थिक तथा मानसिक सहयोग न दिया होता तो वह इस स्थान को नहीं प्राप्त कर सकता था। बच्चन जी के इस सहयोग के कारण ही लेखक उन्हें 'बात का धनी', 'हृदय मक्खन, संकल्प फौलाद' जैसे विशेषणों से विभूषित किया है। वास्तव में बच्चन जी जो कहते थे, उसे पूरा

अवश्य करते थे। उन्होंने किसी की परवाह किए बिना अपने वचन को निभाया। उनका संकल्प फौलाद की तरह मजबूत था।

2. लेखक ने 'हम सबका सौभाग्य' किसके लिए कहा है और क्यों?

उत्तर लेखक जब संघर्षरत था तथा पत्नी की मृत्यु से दुखी हो दिल्ली की सड़कों की खाक छानने के बाद देहरादून में केमिस्ट की दुकान पर काम कर रहा था वहीं उसकी मुलाकात सुप्रसिद्ध साहित्यकार हरिवंशराय बच्चन जी से हुई। बच्चन जी के कवि हृदय ने लेखक की आंतरिक पीड़ा को पहचान लिया। वे लेखक को आगे बढ़ने से उत्साहित करते रहे। एक बार जब बच्चन जी देहरादून आए उस समय बहुत जोरों की आँधी के साथ वर्षा तो रही थी। इस आँधी में अनेक पेड़ धराशायी हो गए और घरों पर पड़ी टीन की छतें उड़कर अन्यत्र जा गिरीं। बच्चन जी ऐसी आँधी में एक टूटकर गिरते पेड़ के नीचे आने से बाल-बाल बचे।

बच्चन जी के बाल-बाल बचने को ही लेखक ने 'हम सबका सौभाग्य' कहा है, क्योंकि बच्चन जी के बिना लेखक अपनी मंजिल तक न पहुँच पाता।

3. 'तुम यहाँ रहोगे तो मर जाओगे... तुम इलाहाबाद जाएगा तो मर जाएगा' यह कथन किसने कहे थे? इनमें से लेखक ने किसे उचित समझा?

उत्तर लेखक शमशेर बहादुर सिंह की पत्नी का निधन टी.बी. नामक बीमारी से हो गया था। ऐसे में अकेले होकर लेखक स्वयं को बहुत दुखी महसूस कर रहा था। लेखक की स्थिति जानकर ही कवि हरिवंशराय बच्चन ने कहा था कि तुम यहाँ रहोगे तो मर जाओगे। अर्थात् देहरादून में रहकर तुम अकेलापन महसूस करोगे। तुम्हें पत्नी की यादें सताती रहेंगी।

लेखक की ऐसी ही स्थिति देख देहरादून के एक डॉक्टर ने कहा था कि तुम इलाहाबाद जाओगे तो मर जाओगे। अर्थात् इलाहाबाद में उसका दुख बाँटने वाला कोई न होगा। वहाँ पत्नी तथा प्रियजनों की याद जिंदगी को और कठिन बना देगी। लेखक ने दोनों पर विचारकर इलाहाबाद जाने का निर्णय लिया क्योंकि हरिवंशराय बच्चन के सानिध्य में असीम साहित्य-संसार उसकी बाट जोह रहा था तथा जहाँ एक सुखद भविष्य उसका इंतजार कर रहा था।

मूल्यपरक प्रश्न

1. 'किस तरह आखिरकार मैं हिंदी में आया' पाठ के आधर पर लेखक शमशेर बहादुर सिंह के मूल्यों का आँकलन कीजिए।

उत्तर लेखक शमशेर बहादुर सिंह किसी चुभती बात को सुनकर दिल्ली आ गए। कुछ समय बाद हरिवंशराय बच्चन की प्रेरणा पर वे इलाहाबाद गए और साहित्य सेवा में रम गए। उनके मूल्यों का आँकलन निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत किया जा सकता है–

1. **तत्काल ठोस निर्णय लेना**–लेखक ने दिल्ली आने, उकील आर्ट स्कूल में दाखिला लेने तथा इलाहाबाद आने जैसे मामलों पर तुरंत ठोस निर्णय लिया जो उपयोगी सिद्ध हुआ।
2. **आत्मविश्वासी होना**–यह लेखक का आत्मविश्वास ही था कि सफलतापूर्वक कला का प्रशिक्षण पूरा किया और बच्चन जी की प्रेरणा पर अंग्रेजी छोड़ हिंदी में साहित्य सृजन किया।
3. **सीखने की लगन**–लेखक में सीखने की उत्कट लगन थी। उसने आर्ट स्कूल में, दवा की दुकान पर और साहित्यकारों के सानिध्य में बहुत कुछ सीखा।
4. **कृतज्ञता-भाव बनाए रखना**–लेखक अपने जीवन की सफलता में अपने से अधिक बच्चन जी का सहयोग और उनकी प्रेरणा को मानता है, जिससे उसकी कृतज्ञता का बोध होता है।

2. साहित्यकार हरिवंशराय बच्चन ने लेखक शमशेर बहादुर सिंह के जीवन की दिशा एवं दशा बदल कर रख दी। 'किस तरह ...आखिरकार मैं हिंदी में आया' पाठ के आधर पर लिखिए कि लेखक ने बच्चन जी के योगदान को किन मूल्यों पर आँकलित किया है?

उत्तर साहित्यकार बच्चन जी ने लेखक की कई तरह से मदद की। इसके अलावा वे बहुत अच्छे मनुष्य भी थे। लेखक ने उनके योगदान को निम्नलिखित मूल्यों पर आँकलित किया है–

1. **कुशल प्रेरयिता होना**—साहित्यकार बच्चन जी के शब्द लोगों वेफ लिए प्रेरणा पुंज होते थे। खुद लेखक भी उनकी प्रेरणा से हिंदी लेखन में आया।
2. **बात और वाणी का धनी होना**—बच्चन जी बात और वाणी के धनी थे। वे अपनी बातों को अच्छी तरह निभाना जानते थे।
3. **समय का पाबंद होना**—बच्चन जी समय के बड़े पक्के थे। देहरादून से इलाहाबाद की गाड़ी पकड़ने के लिए वे घनघोर वर्षा की परवाह किए बिना स्टेशन की ओर चल पड़े।
4. **परोपकार की भावना**—बच्चन जी में परोपकार की भावना भरी थी। उन्होंने बिना किसी प्रत्याशा के लेखक को इलाहाबाद बुलाकर एम.ए. करने के लिए दाखिला दिलाया। उसकी आर्थिक मदद की और साहित्य लेखन में मार्गदर्शन भी किया।